12 / 01 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

विश्व की उद्धार मूर्त, आधार मूर्त आत्मा बनने का अनुभव

➢➢ जग की आत्माओं के उद्धार के निमित्त, मैं आधार मूर्त आत्मा...

➳ _ ➳ सृष्टि रुपी कल्पवृक्ष की जड़ों में, मैं आत्मा...

➳ _ ➳ बीज रूप बाप के साथ स्वयं को इमर्ज कर रही हूँ...

→ जड़ों से पालना पाती हुई मैं आत्मा,

→ इस वृक्ष के तने तक शक्तियां पंहुचा रही हूँ...

→ तने से टाल- टालियाँ,

→ और इस कल्पवृक्ष का पत्ता-पत्ता पालना पा रहा हैं...

- पालना गुणों की...
- पालना शक्तियों की...

→ मैं आत्मा स्वचिंतन कर रही हूँ...

→ अपने इस महान उत्तरदायित्व के प्रति...

→ अपनी समझ की गहराई पर...

→ अपनी साइलेंस की शक्ति और..

→ अटेंशन की निरंतरता पर...

→ अपनी अचल और अडोल अवस्था पर...

- कभी-कभी, और सदा के बीच में एक दूरी हैं...
- अपनी महानता को बहुत कुछ समझा हैं मैंने...
- मगर और बहुत कुछ समझना अभी जरूरी हैं...

➳ _ ➳ स्वमूल्यांकन करती हुई मैं आत्मा...

➳ _ ➳ धीरे धीरे इस देह से स्वयं को अलग महसूस कर रही हूँ...

→ अपने एक एक संकल्प पर अटेंशन रखती हुईं मैं आत्मा...

→ अब सूक्ष्म वतन में बाप दादा के सम्मुख हूँ...

→ एकटक बापदादा की आँखों में निहारती हुई...

→ आँखों के भाव को समझने की कोशिश करती हुई...

→ सम्मोहित सी मैं आत्मा...

→ देख रही हूँ एक अद्भूत सा नजारा...

- मुझ आत्मा के दाएँ और बाएँ...
- दो भव्य आलिशान द्वार...
- सुनहरे अक्षरों से एक पर मुक्ति..
- और दूसरे पर जीवन मुक्ति लिखा हैं..

- मेरे सामने असंख्य आत्माओं की भीड़...
- बापदादा के साथ, बारी-बारी से, मैं आत्मा...
- सबको उनके गंतव्य तक पहुंचा रही हूँ
- किसी को मुक्ति और
- किसी को जीवन मुक्ति का द्वार दिखा रही हूँ...

→ अपने महान कर्तव्य की स्मृति दिलाता ये दृश्य...

→ मुझ आत्मा को...

→ एक गहरी समझ और समर्थी से भरपूर कर रहा हैं...

➳ _ ➳ अपने श्रेष्ठ कर्तव्य और श्रेष्ठ स्वमानों की समर्थी से समर्थ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा, पहुँच गयी हूँ परम धाम, बापदादा की गोद में...

→ अपनी किरणों के घेरें में लेकर...

→ मुझे शक्तियों से भरपूर कर रहे हैं..

- हर हलचल को समाप्त कर मैं आत्मा...
- अचलमूर्त बन रही हूँ...
- सम्पूर्ण अटेंशन मूर्त मैं आत्मा...
- संगम के एक एक सेकंड पर अटेंशन...
- बाप के एक एक महावाक्य पर अटेंशन...
- अपने एक एक संकल्प और संस्कार पर अटेंशन...
- केवल एक की याद पर अटेंशन...
- साइलेंस की शक्ति से भरपूर मैं आत्मा...
- स्वयं को विश्व की आत्माओं की उद्धार मूर्त...
- आधार मूर्त अनुभव कर रही हूँ....